बकरियों में जनन सम्बन्धी समस्याऐं एवं उनका निदान

भा.कृ.अ.प.-केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान
मखदूम, फरह- 281122, मथुरा (उ.प्र.)

जनवरी 2020

भा कृ अनु प
ICAR

CIRG
1979
के. ब. अ. सं.

भारतीय कृषि आधारित अर्थव्यवस्था में बकरी की महत्वपूर्ण भूमिका है। बकरी पालन से अधिकाधिक लाभ अर्जित करने के लिए आवश्यक है कि बकरी पालक उनके उचित रख–रखाब के साथ–साथ बकरियों की जनन सम्बन्धी समस्याओं पर भी ध्यान दें। हमारे देश में बकरियों की इन्ही प्रसूति जन्य रोगों की वजह से उनकी उत्पादकता अन्य विकसित देशों की तुलना में काफी कम हैं।

बकरियों में जनन सम्बन्धी रोग –

1. बकरियों का गर्मी में न आना।
2. बार–बार गर्मी में आना परन्तु गर्भधारण न करना।
3. गर्भपात की समस्या।
4. प्रसव में कठिनाई।
5. योनि या बच्चेदानी का पलटकर बाहर आना।
6. जेर का समय से न गिरना।

गर्मी में न आना –

पोशक तत्वों कर्मी (प्रोटीन, कॉपर, जिंक, फास्फोरस, आयोडीन एवं विटामिन) या असन्तुलन, अधिक गर्मी, अधिक ठंड, अधिक उम्र या जनन से सम्बन्धित हार्मोन्स की कमी से बकरियां गर्मी में नहीं आती है।

निदान –

- मेगनी का परीक्षण कराकर आवश्यकतानुसार अंतः परजीवी के लिए दवा पिलायें।
- मिनरल मिक्चर 10 ग्राम प्रति बकरी के हिसाब से 4 हफ्ते तक दें।
- प्रजनन काल से एक माह पूर्व से 200 – 300 ग्राम दाना प्रति बकरी को दें।
- टोनोफास्फेन का इन्जेक्शन 2–3 मिली प्रति बकरी के हिसाब से एक दिन के अन्तराल पर एक सप्ताह तक दें।

उपरोक्त उपचारों का फायदा न होने की स्थिति में ल्यूटालेज का एक इंजेक्शन 1.5 मिली. प्रति बकरी की दर से मांसपेशी में लगवायें। इस उपचार के बाद 70–75 प्रतिशत बकरियाँ 2–3 दिन के अन्तराल में गर्मी में आ जाती है।

बार-बार मद में आना तथा गर्भ न ठहरना –

इसमें बकरियां प्रायः ठीक समय पर मद के लक्षण प्रकट करती है, परन्तु बकरे से प्रजनन कराने के बाद भी गाभिन होने के बजाए, पुनः गर्मी में आती रहती है।

निदान –

- गर्भधारण कराने से पूर्व बकरे के वीर्य की गुणवत्ता जांच लें।
- बकरी के अण्डाशय की आवश्यकतानुसार अल्ट्रासाउन्ड से जांच करा लें।
- बकरी के जननांगों में संक्रमण का पता लगायें और एन्टीबायोटिक का घोल ग्रीवा मार्ग से बच्चेदानी में डलवायें।
- सही समय पर अण्डक्षरण के लिए रिसेप्टॉल (2.5 मिली.) कोरूलान (500 आई.यू.) गाभिन कराने के समय चिकित्सक की सलाह से लगवायें।

गर्भपात –

बकरियों में गर्भपात मुख्यतः संक्रामक रोगों, पोषण में कमी, दुर्घटना और रासायनिक तत्वों के सेवन आदि से होता है। बकरियों में जननागों के मुख्य संक्रामक रोग ब्रुसिलोसिस, ब्रिबयोसिस एवं क्लैमायडियोसिस है। ब्रुसेलोसिस से ग्रसित बकरियों में गर्भपात तीसरे या चौथे माह में होता है।

निदान –

- गर्भपात वाला भ्रूण, झिल्ली इत्यादि को 3 फुट गहरे गढ़ढे में दबा देना चाहिए।

- गर्भपात वाले भ्रूण इत्यादि के नमूने प्रयोगशाला में भेजकर जांच करानी चाहिए।
- गर्भपात वाली बकरियों को झुण्ड से अलग रखना चाहिए।
- गर्भावस्था में बकरी को उचित आहार देना चाहिए।
- गर्भकाल के अन्तिम दिनों में बकरियें का परिवहन नहीं करना चाहिए।

प्रसव में व्यवधान –

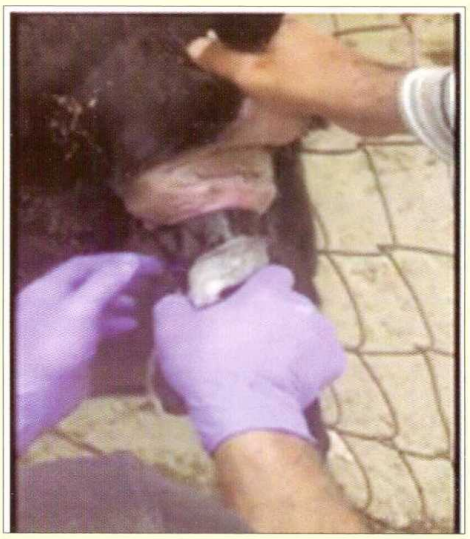

सामान्य प्रसव में बच्चे की अगली दोनों टांगे व सिर पहले बाहर आते हैं। परन्तु कई बार बच्चे की एक या दोनों टांगे या गर्दन मुड़कर फंस जाती है, जिससे बच्चा बच्चेदानी से बाहर नहीं आ पाता है। यह रोग मुख्यतः दो कारणों से होता है। पहला बकरी की बच्चेदी में विकार, बकरी का कमजोर होना व अधिक उम्र होना। दूसरा उत्पन्न बच्चे में विकृति होना।

निदान –

- समय पूर्ण हेाने पर बकरी की यथा सम्भव मदद करें।
- अधिक समय लगने पर शीघ्र अति शीघ्र पशु चिकित्सक से सम्पर्क करें।

जेर का न गिरना –

सामान्य प्रसव के उपरान्त बकरी की जेर 6 से 8 घन्टे में गिर जाती है। समय से पूर्व प्रसव अथवा गर्भकाल में उचित पोषण के अभाव में कमजोर बकरियां जेर गिराने में असमर्थ रहती है। इस रोग में जेर आंशिक या पूर्ण रूप से बाहर नहीं निकलती है। ऐसी बकरी अनमनी होकर खाना–पीना छोड़ देती है। जेर के कई दिनों तक बाहर न निकल पाने से बच्चेदानी में सड़न उत्पन्न हो जाती है।

निदान -

- योनीद्वार से बाहर लटकी हुई जेर को साफ चिमटी से पकड़ कर लपेटने से पूरी जेर बाहर आ जाती है।
- बच्चेदानी में ट्रेटासाइक्लिन द्रव्य या फ्यूरिया बोलस डालना चाहिए।
- साथ ही साथ बकरी को चालीस से पचास मिली यूट्रोटोन द्रव्य 3 दिन तक पिलाना चाहिए।

गर्भाशय का उलट जाना या बाहर निकलना -

बकरियों में प्रसव के उपरान्त गर्भाशय का बाहर आना भी एक प्रसूतिजन्य रोग है। समय पर उपचार न होने पर पशु की मृत्यु भी हो जाती है। इसमें ब्याने के बाद योनी या बच्चेदानी दोनों शरीर से बाहर निकल आते हैं। इस रोग के मुख्य कारण बकरी की अधिक उम्र, गर्भावस्था में आहार की कमी, व आनवुंशिकी है।

निदान -

- बाहर निकले हुए भाग को लाल दवा से साफ करके उस पर जाइलोकेन जैली लगाते है।
- तत्पश्चात बाहर निकले भाग को हाथ या मुट्ठी के सहारे योनी के अन्दर धीरे–धीरे ढकेलते हैं।
- इसके साथ–साथ योनी के ऊपर से नीचे तक रस्सी का छिका लगाना चाहिए, जिससे बच्चेदानी पुनः बाहर न आये।
- पशु इस प्रकार बांधे की उसके शरीर का पिछला भाग ऊपर तथा अगला भाग नीचे रहे।
- प्रभावित पशु को एन्टीबायोटिक, दर्द का इन्जेक्शन व आस्टोकैल्शियम का सीरप तीन दिन तक दें।

गर्भाशय शोथ –

बकरी के ब्याने के बाद उसकी योनी तथा गर्भाशय में सूजन आ जाती है। जिसमें पहले लाल रंग का मिश्रित श्राव तथा बाद में सफेद श्राव निकलने लगता है जो कि धीरे–धीरे गन्दा व बदबूदार हो जाता है। साथ ही साथ बकरी को ज्वर भी आ जाता है और वह खाना–पीना भी छोड़ देती है।

निदान –

- पशु चिकित्सक की मदद से गर्भाशय की सफाई कराकर उसमें फ्यूरिया बोलस पांच दिन तक डलावाये।
- आवश्यकता होने पर पशु को एन्टीबायोटिक इन्जेक्शन भी लगवाये।

लेखक :

चेतना गंगवार, विजय कुमार, बृज मोहन, विनय चतुर्वेदी,
ए.के. दीक्षित, एस.डी. खर्चे

प्रकाशक :

निदेशक : भा.कृ.अ.प.-केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान, मखदूम, फरह, मथुरा

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

भा.कृ.अ.प.-केन्द्रीय बकरी अनुसंधान संस्थान

मखदूम, फरह-281122, मथुरा (उ.प्र.)

सी.आई.आर.जी. हैल्पलाइन : 0565-2970999

वेवसाइट : www.cirg.res.in; E-mail : helplinecirg@gmail.com